चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अश्विनी
एम.एड छात्रा आई.सी. जी

डॉ. प्रीति कछावा
सहायक आचार्या, रघुकुल कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, जयपुर

सारांष

शोध-सार : अध्यापक शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम (बीएड), अध्यापक बनने के लिए व्यवसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम है, यह पाठ्यक्रम पूर्व में स्नातक स्तर के पश्चात् एकवर्षीय पाठ्यक्रम था, फिर इसे द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में परिवर्तित कर दिया गया, वर्तमान में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम तो संचालित है ही, साथ में अध्यापक बनने के लिए 12वीं के बाद ही अध्यापक शिक्षा के व्यवसायिक पाठ्यक्रम चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई है जिसमें स्नातक के साथ–साथ प्रशिक्षणार्थी बी.एड पाठ्यक्रम भी समानान्तर रूप से पढ़ता है, स्नातक स्तर के तीन वैकल्पिक विषयों के आधार पर प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण विषय का चयन करता है, शोधकर्त्ता ने चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषयके पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया, अपने लघु शोध कार्य में प्रशिक्षणार्थी ने सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के विश्लेषणात्मक अध्ययन, अध्ययन के उपरांत शिक्षक प्रशिणार्थियों से उपेक्षाओं का अध्ययन एवं सामाजिक अध्ययन के अध्यापक के लिए इसकी उपयोगिता का अध्यपन उद्देश्य निर्धारित किए। प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान के विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है, शोध कार्य में राजस्थान में संचालित चार वर्षीय बी.ए बी.एड पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन विषय के पाठ्यक्रम का विश्लेषण किया गया है जिसमें शोधार्थी को यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषय का पाठ्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम है जिसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थी एक प्रशिक्षित सामाजिक अध्ययन का अध्यापक बनता है।

बीज-शब्द :

1. **प्रशिक्षण :** ऐसी संगठित प्रक्रिया जिसके द्वारा लाभार्थी किसी निश्चित उद्देश्य के लिए ज्ञान एवं कौशल सीखता है।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण** अध्यापक वृत्ति की योग्यता धारण करने के लिए दिया गया सेवा पूर्व प्रशिक्षण।
3. **एकीकृत शिक्षा :** एकीकृत शिक्षा में शिक्षा के सन्दर्भ में समग्र दृष्टिकोण अपनाया जाता है, इसके माध्यम से किन्हीं दो पाठ्यक्रम को मिलाकर या समाहित करके पढ़ाया जाता है।
4. **सामाजिक अध्ययन :** हमारे चारों के पर्यावरण सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौगोलिक, अतीत आदि विषयवस्तु से सम्बन्धित अध्ययन।
5. **विश्लेषण :** वेषय वस्तु का विस्तारपूर्वक अध्ययन करना।

ि ाक्षा प्रक्रिया के तीन अंग होते हैं शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुदेशन[1]शिक्षण शिक्षा की वह क्रिया है, जो कक्षागत शिक्षण एवं छात्र के मध्य अन्तक्रिया के माध्यम से सम्पन्न होती है, इस प्रक्रिया में शिक्षक एवं छात्र दोनों का विकास होता है। प्रशिक्षण शिक्षा की दूसरी प्रक्रिया है जिसमें भावी शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर अध्यापन के लिए तैयार किया जाता है, अनुदेशन वह पाठ्य सामग्री है, जिसका शिक्षक निर्माण करता है और छात्र उसका अध्ययन करता है। शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुदेशन नीतियों प्रक्रियाओं आदि के समूह को अध्यापक शिक्षण कहते है, जो अध्यापकों के ज्ञान, अभिवृत्ति, व्यवहार पढ़ने के कौशल की वृद्धि के लिए बनाई गई होती है। अध्यापक शिक्षा में बी.एड. पाठ्यक्रम एकवर्षीय से द्विवर्षीय हुआ और अब शिक्षक शिक्षा का एकीकृत पाठ्यक्रम लागू हो चुका है, जिसमें चार वर्षीय बी.ए. व बी.एड. पाठ्यक्रम को एकीकृत करके चार वर्षीय एकीकृत शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम बनाया गया है, जिसमें कला शिक्षण में तीन वर्ष के स्नातक पाठ्यक्रम के साथ एक वर्ष अतिरिक्त जोड़ करके, बी.एड में लगने वाले समय को कम कर दिया गया है चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में तृतीय वर्ष में स्नातक के तीन विषयों के आधार पर शिक्षण विषय दिया जाता है जिसमें सामाजिक अध्ययन विषय, सामाजिक अध्ययन विषय समूह समाजशास्त्र, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि के आधार पर दिया जाता है अतः शोधार्थी ने सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन अपने लघुशोध कार्य में सम्पन्न किया है।

समस्या का औचित्य :

विदेशों में प्रस्तुत समस्या के क्षेत्र में विभिन्न शोध कर्त्ताओं द्वारा बहुत से अनुसंधान कार्य किये गये जैसे – शर्मा, सीमा (2018) ने Critical appraisal of secondary teacher education curriculum with specific reference to NCTE curriculum frame work विषय पर अध्ययन किया, रेनु (2014) ने An Evaluation of NCERT programmes for teacher education in terms of its objectives, expectations of functions based on perception of teacher educators विषय पर अध्ययन किया। सिंह विजेन्द्र (2018) ने Integrated innovation programme for educational reinforcement an analytical study विषय पर अध्ययन किया। बहल सुगंधा (2008) ने "Comparative study of academic achievements, intelligence and attitude towards teaching profession of one year B.Ed. course students and four year B.A. B.Sc. B.Ed. Course students विषय पर अध्ययन किया इसलिए शोधकर्ता ने इसी तलाश में इस शोध समस्या का चयन किया है, क्योंकि पूर्व में प्रस्तुत समस्या पर सम्मिलित रूप से कार्य नहीं हुआ है।

समस्या कथन :

''चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :

1. चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण के (बी.ए. बी.एड) पाठ्यक्रम के सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषय का विश्लेष्णात्मक अध्ययन करना।
2. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के पाठ्यक्रम के विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से अपेक्षाओं का अध्ययन करना।
3. सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का सामाजिक अध्ययन के अध्यापक के लिए उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध की परिसीमाऐं

प्रस्तुत लघु शोध को राजस्थान में संचालित चार वर्षीय एकीकृत शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषय के पाठ्यक्रम के विश्लेषण तक सीमित किया गया है, जिसमें तृतीय वर्ष में लागू सामाजिक अध्ययन विषय का पाठ्यक्रम का ही विश्लेषण किया गया है।

शोध विधि :

प्रयुक्त अध्ययन में शोधार्थी ने वर्णनात्मक अनुसंधान की विश्लेषणात्मक विधि का उपयोग किया है तथा अनुसंधान के गुणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके सभी सूचनाओं और आंकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

शोध के निष्कर्ष :

शोधार्थी द्वारा चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन उद्देश्यों एवं पाठ्यवस्तु विश्लेषण के आधार पर किया गया जो निम्नानुसार है :–

1. शोधार्थी द्वारा सामाजिक अध्ययन शिक्षण विषय का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सामाजिक अध्ययन विषय का पाठ्यक्रम एक उपयोगी पाठ्यक्रम है इसमें सामाजिक अध्ययन विषय की अवधारणा, अर्थ, क्षेत्र प्रकृति, विशेषताएँ, आवश्यकता एवं महत्व, उद्देश्य, शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन, सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध, सामाजिक अध्ययन शिक्षण के पाठ्यक्रम की योजना, सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक, सामाजिक अध्ययन शिक्षण की पाठयोजना, शिक्षण की विधियाँ एवं प्रविधियाँ तथा माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण को पाठ्यक्रम, मूल्यांकन एवं उसकी प्रविधियों को समाहित किया गया है, जिसके द्वारा प्रशिक्षणार्थी सामाजिक अध्ययन शिक्षण की अवधारणा का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करते है जो कि उनके चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण में एक उपयोगी, व्यवसायिक कुशल, सक्षम

सामाजिक अध्ययन का शिक्षक बनाने के लिए निर्धारित किया गया है, इसमें शोधार्थी द्वारा ईकाइयों के अनुसार विश्लेषण किया गया है।

2. शोधार्थी द्वारा सामाजिक अध्ययन शिक्षण के पाठ्यक्रम के विश्लेषणात्मक अध्ययन के उपरान्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से अपेक्षाओं के अध्ययन करने से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षाओं के अनुकूल है। प्रशिक्षणार्थी सामाजिक अध्ययन की अवधारणा के बारे में समझ विकसित करते है, सामाजिक अध्ययन के तथ्यों व उद्देश्यों की समझ विकसित करते हैं, प्रशिक्षणार्थी सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के तरीकों, उपकरणों ओर तकनीकों से परिचित होते हैं, उनमें सहायक सामग्री के प्रयोग करने, व्यवहारिक गतिविधियों के आयोजन, पाठयोजना बनाना, प्रस्तुतीकरण, मूल्यांकन करने का कौशल विकसित होता है।

3. शोधार्थी द्वारा चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सामाजिक विषय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का सामाजिक अध्ययन के अध्यापक के लिए उपयोगिता का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अध्यापक के लिए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम कितना उपयोगी है,जैसे पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन की प्रकृति क्षेत्र व उद्देश्य आवश्यकता तथा महत्व का प्रशिक्षणार्थियों को ज्ञान प्राप्त होता है। ब्लूम की टेक्सोनामी का ज्ञान प्राप्त होता है। सामाजिक अध्ययन का अन्य विद्यालयी विषयों से सहसम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त होता है। पाठ्यक्रम की अवधारणा, उद्देश्य, निर्माण के सिद्धान्त, पाठ्यक्रम की समालोचना का ज्ञान प्राप्त होता है।

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग, पाठ्यपुस्तक, इकाई योजना, पाठ योजना का निर्माण करने का ज्ञान प्राप्त होता है। सामाजिक अध्ययन के शिक्षक का कार्य, शिक्षण की विधियों, प्रविधियों, कक्षा कक्ष का ज्ञान प्राप्त होता है। सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के सामुदायिक संसाधनों का प्रयोग करना पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक मूल्यांकन परीक्षण व ब्लू प्रिन्ट के डिजाईन आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

शोध के सम्बन्ध में सुझाव :

प्रस्तुत शोध का विषय अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है। इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम की कमियों को दूर किया जा सकता है। इसके सम्बन्ध में सुझाव व शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित है –

विद्यार्थियों के लिए :-

शोधार्थी द्वारा किये गये शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम में जिन–जिन उद्देश्यों की प्राप्ति में कमी रह गयी है उन कमियों को दूर कर प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है

1. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के पाठ्यक्रमकी विषय सामग्री विद्यार्थियों को सृजनशील बनने पर बल दे।
2. पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं के अन्तर्गत विद्यार्थियों को अध्ययनशील व व्यवहार कुशल होना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को अपने स्वयं लक्ष्य व उद्देश्यों को निर्धारित करना चाहिए।
4. विद्यार्थियों में समायोजन, नेतृत्व कुशलताअनुशासन, विषय का ज्ञान नवाचारों का प्रयोग, आदि का विकास होना चाहिए।
5. पाठ्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए।

एनसीटीई के लिए सुझाव -

1. सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम के निर्माण के सिद्धान्त के आधार पर सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता का अभावपाया गया है। अतः एनसीटीई द्वारा इस कमी को दूर कर प्रशिक्षणार्थियों में सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता के गुणको विकसित किया जा सकता है।
2. सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षाओं के आधार पर स्वतंत्र अध्ययन कमी पाई गईहै, अतः एनसीटीई द्वारा इस कमी को दूर कर प्रशिक्षणार्थियों में स्वतंत्र अध्ययन के गुण को विकसित किया जासकता है।
3. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में शिक्षक की उपयोगिता का ध्यान कर एनसीटीई को इसकीसमय–समय पर समीक्षा कर इसकी कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
4. एनसीटीई को पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना चाहिए।

प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए सुझाव -

1. महाविद्यालयों में स्मार्ट कक्षाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. महाविद्यालयों में कम्प्यूटर मय इन्टरनेट वाई–फाई सुविधाओं युक्त होने चाहिए।
3. महाविद्यालयों में पुस्तकालय की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे पुस्तकें, सन्दर्भ ग्रन्थ, देश एवं विदेशों से प्रकाशित पत्रपत्रिकाओं के साथ–साथ सी.डी. डिजिटल पुस्तके ऑनलाईन पत्र पत्रिकायें आदि की व्यवस्था होनी चाहिए।
4. बी.ए. बी.एड. पाठ्यक्रम को सृजनात्मक योग्यता का विकास करने वाला होना चाहिए। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षणमहाविद्यालयों को प्रयास करना चाहिए।
5. महाविद्यालयों में विभिन्न प्रकार की प्रयोगशालायें–रसायन विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, भाषा विज्ञान आदि की व्यवस्था होनी चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए सुझाव -

1. शिक्षक प्रशिक्षकों को सामाजिक अध्ययन विषय का पूर्व ज्ञान व वर्तमान ज्ञान होना चाहिए।
2. शिक्षक प्रशिक्षकों को सामाजिक अध्ययन की अपेक्षाओं को ध्यान में अपने उद्देश्य निर्धारित करने चाहिए।
3. शिक्षक प्रशिक्षकों को सामाजिक अध्ययन के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की उपयोगिता को ध्यान में रख कर संश्लेषण व विश्लेषणकी क्षमता, स्वतंत्र अध्ययन की क्षमता व सामाजिक अध्ययन विषय के प्रति दृष्टिकोण रखना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ -

1. प्रस्तुत शोध कार्य से प्रशिक्षणार्थियों में बी.एड. बी.एड. में सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोणविकसित हो सकेगा।
2. प्रस्तुत शोध कार्य से महाविद्यालयों को सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में योजना बनाने एवं क्रियान्वयन करने में मददमिल सकेगी।
3. प्रस्तुत शोध कार्य से नीति–निर्माताओं को अपने भावी योजना बनाने एवं वर्तमान में बी.ए. बी. एड. सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आ रही कमियों को दूर करने में मदद मिल सकेगी।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान में संचालित चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पर ही किया गया है जोभावी अनुसंधान कार्य अन्य प्रदेशों को लेकर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य बी.ए. बी.एड. के सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम पर किया गया है। यह बी. ए. बी.एड. के अन्यविषयों के पाठ्यक्रम पर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य सामाजिक अध्ययन के किसी एक भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, अन्य विषयों में भी किया जासकता है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य बी.ए. बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति प्रशिक्षणार्थियों के अभिवृत्ति के अध्ययन पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- डॉ. सिडाना अशोक एवं डॉ. पी.एन. (2006), सामाजिक अध्ययन शिक्षण पृ. स. 276–312.
- डॉ. परवीन आबिदा एवं डॉ. अग्रवाल सन्ध्या (2006), सामाजिक अध्ययन शिक्षण, आस्था प्रकाशन, पृ. स. 283–290.
- वशिष्ठ, उमेश कुमार (2000), शैक्षिक अनुसंधान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- राय, पारसनाथ (1974), अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।